19

वलयाकार सूर्य ग्रहणः एक अनुभव

इस साल 15 जनवरी को केरल-तमिलनाडु के कुछ इलाकों से लम्बी अवधि का वलयाकार सूर्य ग्रहण दिखाई दिया था। ऐसे मौके ज़िन्दगी में कम ही मिलते हैं और कई दफा मौका हाथ से निकल जाने का मलाल ताउम्र बना रहता है। लेकिन कक्षा सातवीं की विद्यार्थी स्वच्छंद ऐसा मौका छोड़ना नहीं चाहती थी। वो न सिर्फ सूर्य ग्रहण देखने गई, बल्कि कुछ शानदार प्रयोग और अवलोकन भी दर्ज किए। उन्होंने अपने अनुभवों को विस्तार से लिखकर हम सबके साथ साझा करने की कोशिश की है।

आसान नहीं है घुलने-मिलने को समझना

कुछ जिज्ञासु बच्चों ने एक प्रयोग करके देखा। उन्होंने पानी भरे दो अलग-अलग गिलास में शक्कर और नमक को घोला। बच्चों ने देखा कि पानी में नमक के मुकाबले शक्कर की ज़्यादा मात्रा घुलती है।

बच्चों का दूसरा अवलोकन था कि पानी में शक्कर को घोलने पर पहले तो आयतन नहीं बढ़ता लेकिन एक हद से ज़्यादा शक्कर घोलने पर आयतन भी बढ़ने लगता है। परन्तु नमक के साथ ऐसा नहीं होता।

अब सवाल यह था कि ऐसा क्यों होता है। ऐसे ही कई सवालों की वजह से घुलनशीलता की गहराई को समझना आवश्यक लगा। तो, दो पानी भरे गिलास, नमक, शक्कर तथा कुछ और सामग्री लेकर इस लेख को पढ़ने के लिए तैयार हो जाइए।

29

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-11, (मूल अंक-68) मार्च-अप्रैल 2010

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **ऑलिव रिडली और उड़ीसा**
दीपक वर्मा

19 | **वलयाकार सूर्यग्रहण: एक अनुभव**
स्वच्छंद गंदगे

29 | **आसान नहीं है घुलने-मिलने को समझना**
सुशील जोशी

45 | **भिन्न से अनुपात की ओर**
मो. उमर

58 | **पी.सी. वैद्य**
संकलित

59 | **मैं सिर्फ बच्चों का लेखक नहीं हूँ**
अविनन्दन मुखर्जी

69 | **स्कूल के दिन**
स्टीफन ज़्वाइग

78 | **एक अन-गिना नाम**
रेवा यूनुस

91 | **बच्चों को आज़ादी कितनी?**
नसीम अख्तर